Rs. 5.00/-

LOOK N LEARN
CHILDREN'S JAIN MAGAZINE

25th June 2017 I Every Fortnight I English, Hindi & Gujarati

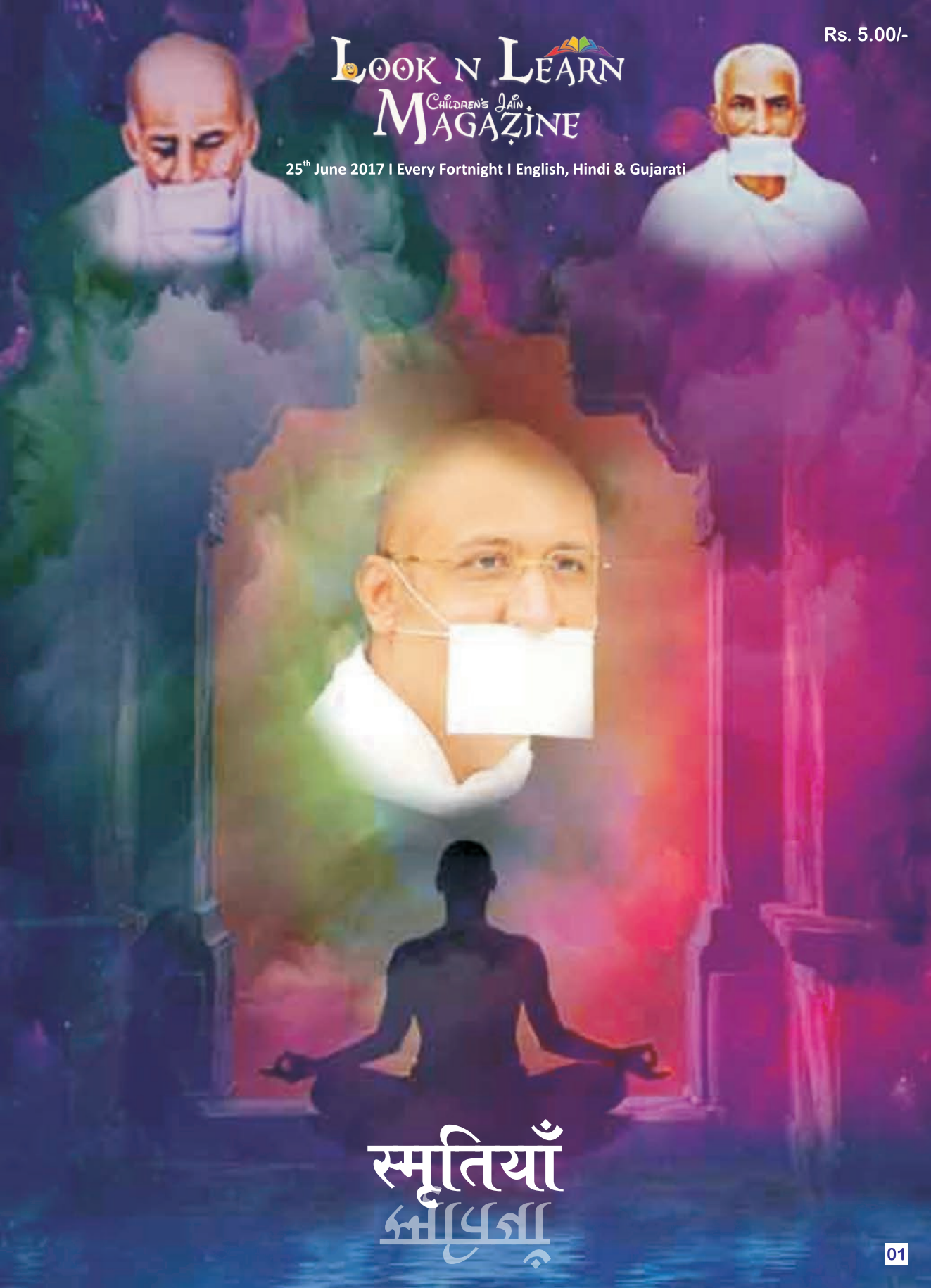

स्मृतियाँ

Year - 9, Vol: 9, Issue:10 Date: 25.06.2017
Editor: Ashokbhai Sheth 20, Vanik Niwas, 1st floor, Cama Lane, Ghatkopar (West), Mumbai - 400 086.

इस गुरुपुर्णीमा करे....
कुछ अनोखा, कुछ अद्वितीय, कुछ निराला...

प्यारे बच्चो,

क्यों न हम इस गुरुपुर्णिमा को अपने पूज्य गुरुदेव को उनके गुरुदेव की मीठी यादें भेट स्वरुप दें!!!

हम, इस गुरुपुर्णिमा के दिन पूज्य श्री जयचंद्रजी महाराज साहेब और पूज्य श्री माणेकचंद्रजी महाराज साहेब के जीवन चरित्र को जाने...!

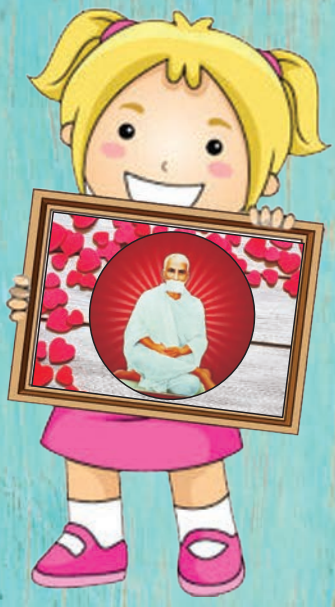

Cheque or Draft:
Arham Yuva Group

Parasdham
Vallabh Baug Lane, Tilak Road,
Ghatkopar (E), Mumbai - 77

Subscription for 10 years
India : Rs. 1000/-
Abroad : Rs. 5000/-

Children, As we have father, grandfather, forefather in our worldly life, In the same way in saiyam life also we have Sishya, Guru and Param Guru..... Do you know who is the Param Guru of our Pujya Gurudev?

Come let's know about them!

"पूज्य डुंगर-जय-माणेक
प्राण-रति गुरुभ्यो नमः"

गोंडल गच्छाधिपति पूज्य
श्री डुंगरसिंहजी
म.सा.

पूज्य
श्री जयचंद्रजी
म. सा.

तपस्वी पूज्य
श्री माणेकचंद्रजी
म. सा.

सौराष्ट्र केसरी पूज्य
श्री प्राणलालजी
म. सा.

तपसम्राट पूज्य
श्री रतिलालजी
म. सा.

राष्ट्रसंत पूज्य
श्री नम्रमुनि
म.सा.

The Guiding Light

Around 150 years ago.
लगभग १५० वर्षे पूर्व की बात है।...

A child wad born in a small town called Jetpur, which was situated near the river Bhadar, in the state of Saurashtra. His father was Shri Premjibhai and mother Shrimati Kuvarbai. When the son was in the womb, the mother saw a flag in her dream. After birth on seeing the divine forehead of the new born baby, the parents named him Jaichandra..

सौराष्ट्र के भादर नदी के किनारे जेतपुर नाम का एक गाँव था। वहाँ एक जैन परिवार में श्री प्रेमजीभाई और मातुश्री कुंवरबाई के घर एक यशस्वी पुत्र का जन्म हुआ। बालक जब गर्भ में था तब माता ने धजा का स्वप्न देखा और बालक के भव्य ललाट को देखकर उनका नाम 'जयचंद्र' रखा।

After some span of time 2nd child was born. The divinity of the child was like a precious gem (Manek), so they named him as Manekchandra. Both these brothers looked alike. After short span of time, the 3rd child was born and they named him Mavji.

थोडे समय के बाद दूसरे पुत्र का जन्म हुआ। दुसरे बालक की भव्यता माणेक जैसी मूल्यवान थी इसलिए उस बालक का नाम 'माणेकचंद्र' रखा गया। दोनो भाई दिखने में समान थे। थोडे समय के बाद तिसरे पुत्र का जन्म हुआ जिनका नाम 'मावजी' रखा गया।

Childhood days of these 3 brothers was going smoothly. But an unexpected incident came in their life. Their father Shri Premjibhai became bedridden. He put all the responsibility on Jaichandra's shoulder. Jaichandra got engaged at a very early age of 13.

तीनों भाईओं के बचपन में प्रसन्नता थी। अचानक से पिताजी के बिमार होने पर परिवार की सारी जिम्मेवारी बड़े भाई जयचंद्र पर आ गई थी। तेरह साल की वय में जयचंद्रजी की सगाई हुई।

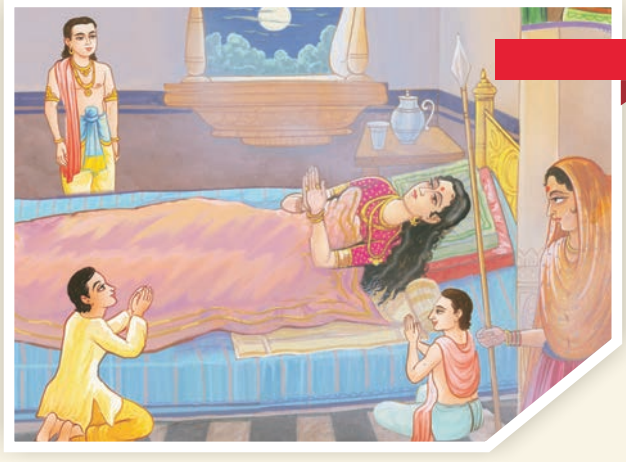

Meanwhile his father expired. In order to carry out his responsibility, Jaichandra started to work in the court. Seeing his proficiency in his work he was transferred to court in Bilkha. In short time he got the post of Governor in Bilkha. Their mother also expired due to Cholera within 2-3 yrs.

इस दरम्यान उनके पिताजी का देहांत हो गया। जयचंद्रजी अपनी जिम्मेवारी निभाने के लिए कोर्ट के काम में लग गए। उनकी कार्यदक्षता देखकर उनकी बदली बिलखा गाँव के कोर्ट में हुई। थोडे समय में उन्हें बिलखा में गर्वनर पद प्राप्त हुआ। उनकी माता का भी अगले २-३ सालों में कोलेरा की वजह से देहांत हो गया।

During this period fear of dacoit attacks had increased. To protect the common men, Shree Jaichandraji was appointed as police officer. He caught the dacoit with courage. At that time he was just 17 years old.

On day Rajmataa, Kamribai, wanted to visit Tulsishyam. According to their culture males weren't allowed to enter in Kathi darbaar. But seeing Shree Jaichandra's patriotism and character, the king decided to send Rajmataa along with him. Shree Jaichandra started the tour with Rajmataa to Tulsishyam and then reached Prabhaspatan. Who knew this tour was going to become the eternal tour for Shree Jaichandraji.

इस दरम्यान बिलखवा में लूटेरों का डर दिन भर दिन बढ़ता जा रहा था। प्रजा की रक्षा के लिए श्री जयचंद्रजी की पुलिस अधिकारी के रुप में नियुक्ति हुई। श्री जयचंद्रजीने साहस और हिंमत के साथ लूटेरों को बंदी बना लिया। तब उनकी उम्र १६ वर्ष की थी।

एक दिन राजमाता कमरीबाई को तुलसीश्याम के दर्शन करने की ईच्छा हुई। सामान्य तौर पर काठी दरबार में अंतःपुर में अन्य पुरुष का प्रवेश नहीं होता। परंतु श्री जयचंद्रजी की राज्यनिष्ठा, चारित्र्य -निष्ठा को देखकर महाराज ने राजमाता को उनके साथ भेजने का निर्णय लिया। राजमाता के साथ श्री जयचंद्रजी तुलसीश्याम यात्रा करके प्रभासपाटण आए। यह यात्रा श्री जयचंद्रजी के लिए अमर यात्रा का निमित्त बननें जा रही थी।

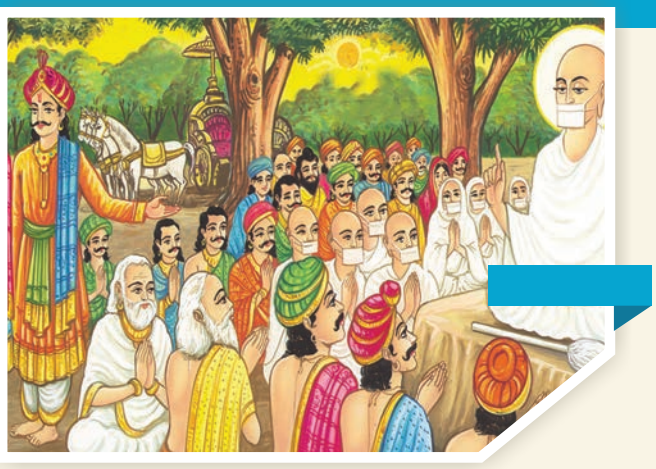

At that time, Aacharya Shree Devjiswami, was settled near Veraval city, which was near PrabhasPatan. When Pujya Shree Jaichandraji had gone to visit Pujya Gurudev. He was giving discourse to disconnect from the worldly life. On hearing, Shree Jaichandraji became so much engrossed that he stood up and requested,"He Gurudev! give me Diksha and help me to move forward on the path of spirituality'. Gurudev also examined this precious gem. Shree Jaichandraji gave intimation to rajmataa that now he doesn't want any rights or any position. Rajmataa was sad hearing this and tried hard to bring him back, but he stood strong on his decision.

प्रभासपाटण के पास वेरावळ शहर में आचार्य पूज्य श्री देवजीस्वामी बिराजमान थे। श्री जयचंद्रजी जब उनके दर्शन के लिए गए तब गुरुदेव वैराग्यसभर प्रवचन दे रहे थे। उनका वैराग्य भरा प्रवचन सुनकर श्री जयचंद्रजी इतने लीन हो गए कि वहीं से उठकर उन्होंने गुरुदेव से विनंती की, के ''गुरुदेव! मुझे दीक्षा देकर मुझे आत्म कल्याण के मार्ग में आगे बढ़ाईए।'' गुरुदेव ने भी इस बहुमूल्यवान रत्न को परख लिया था। श्री जयचंद्रजी ने राजमाता को यह संदेश दिया कि उन्हें कोई पद या अधिकार नहीं चाहिए। यह सुनकर राजमाता को दुःख हुआ और उन्हे फिरसे बुलाने के लिए प्रयत्न किए, पर जयचंद्रजी अपने निर्णय पर अटल रहे।

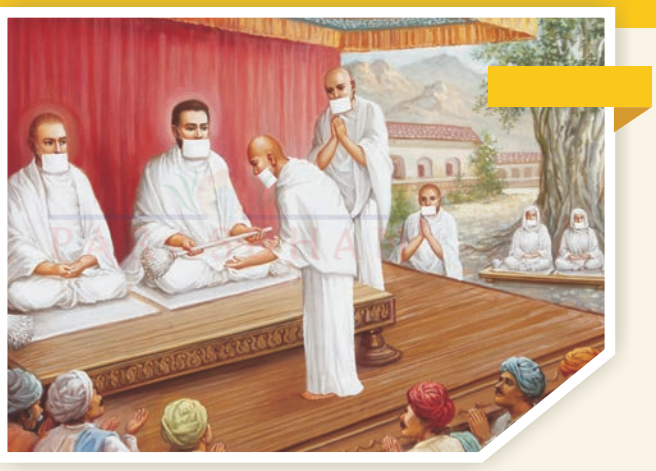

On hearing this decision of the elder brother, the younger brothers also decided to follow this path. This way the path of all the 3 brothers were confirmed. But, the younger brother, Shree Mavji expired due to some ailment before taking Diksha. With this incident, the decision of both the brothers became stronger. But the family members didn't give the permission to take Diksha. Shree Jaichandraji, as an elder brother gave permission to Shree Manekchandraji to take diksha at the age of 13. On seeing strong determination of elder brother, family members gave permission to Shree Jaichandraji also. After a month he also took Diksha. In this way both the brothers started their Saiyam life. In Guru's sanidhya, Jai-Manek muni had made Swadhya and Tap sadhana part of their life.

बड़े भाई के यह निर्णय को सुनकर दोनों भाईओं ने भी संसार त्याग करने का निर्णय किया। इस तरह तीनों भाइयों का मार्ग निश्चिंत हो गया परंतु छोटे भाई श्री मावजी की दीक्षा से पहले ही बिमारी की वजह से मृत्यु हो गई। इस घटना से दोनों भाई का निश्चय और भी दृढ बन गया। परंतु परिवारजनों ने दीक्षा की अनुमति नहीं दी। बड़े भाई श्री जयचंद्रजी ने श्री माणेकचंद्रजी को १३ साल की उम्र में दीक्षा की आज्ञा दे दी। बडें भाई का वैराग्यभाव देखकर परिवारजनों ने उन्हें भी आज्ञा दे दी। इसतरह दोनों भाईयोंने संयम जीवन का प्रारंभ किया। गुरु के सानिध्य में रहकर श्री जय-माणेक मुनिवरोंने स्वाध्याय और तपसाधना को अपना जीवन बना लिया।

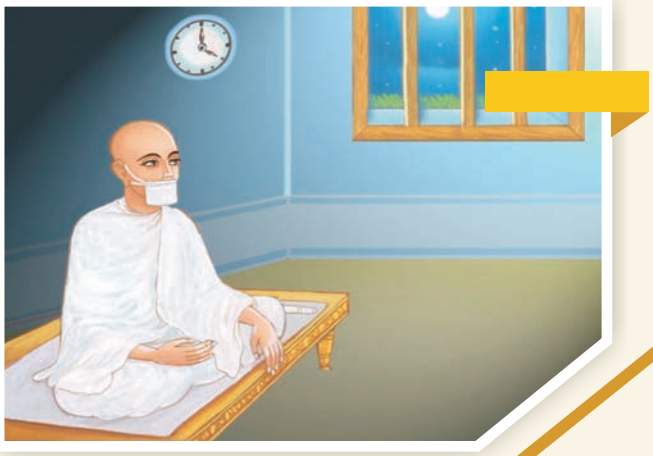

पूज्य श्री माणेकचंद्रजीकी तपसाधना

अविरत ध्यान

वस्त्र और
पात्रा की मर्यादा

निद्रा केवल
दो घंटो की

स्वाध्याय
और साधना

१२ वर्ष तक चने का आटा
और छाछ का सेवन

दिन में गरम रेत पर
ध्यान साधना

रात की ठंड में
ध्यान साधना

१८ महिने तक
केवल छाछ और लकड़े के
भूसें (powder) का आहार

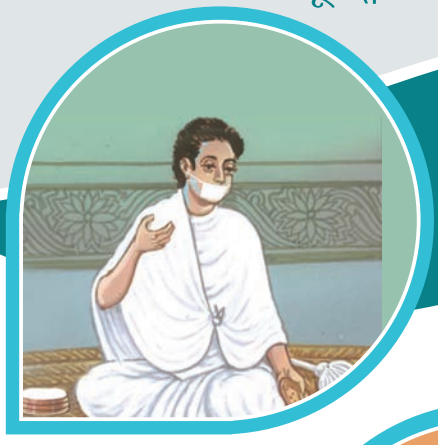

दिन में सिर्फ आठ
द्रव्य का सेवन

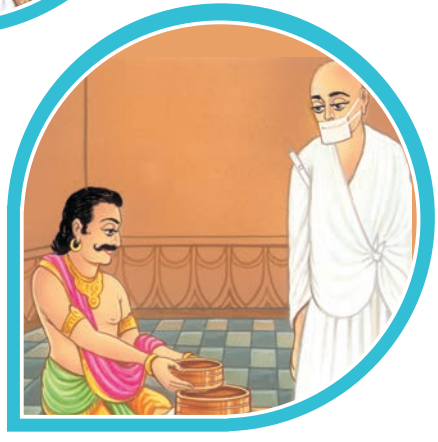

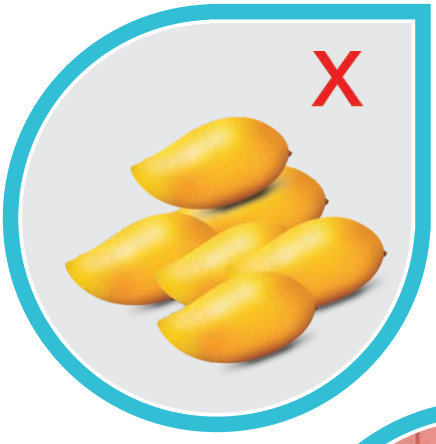

आम का
जीवन पर्यंत त्याग

१७ साल की
उम्र में जीवनपर्यंत
पानी का त्याग

सर्व मिठाईयाँ और सूखे मेवे,
मुखवासका जीवनपर्यंत त्याग

In this way by doing extreme penance and difficult vihar, Shree Manekchandji got the tittle name 'Tapasviji' and became famous. He received knowledge from pujya Gurudev and campaigned for Jain religion. At various places he started jainpat shala and vidhyapeet. He encouraged learning Sanskrit and Prakrit language.

इस तरह उग्र तपसाधना और कठिनतम विहार करके श्री माणिकचंद्रजी 'तपस्वीजी' के उपनाम से प्रसिध्ध हुए। पूज्य गुरुदेव से ज्ञान प्राप्ति की और जैन धर्म का प्रचार किया। उन्हों ने जगह-जगह पर पाठशाला और जैन विद्यालय की स्थापना की। उन्होने संस्कृत और जैन प्राकृत भाषा के अभ्यास के लिए लोगों को प्रोत्साहित किया।

Magical incident :

चमत्कारिक घटना :

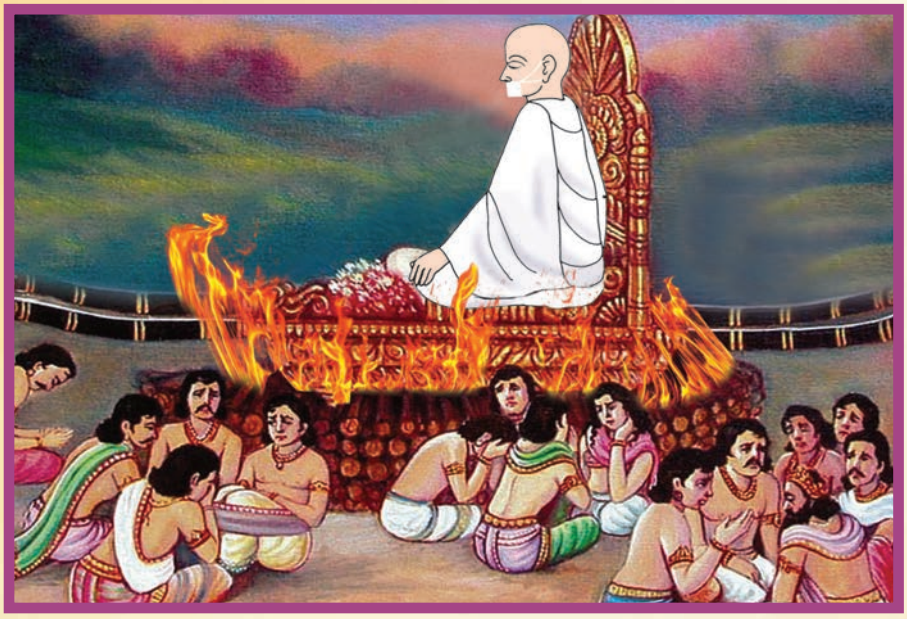

In Jetpur, at the time of Manekchandraji m.s. kaaldharma, his body was bought for cremation to Modhwadi. That time, a question aroused that who will do the cremation? There was an discussion argument over this. At that time a miracle happened! What...? Fire started itself...!!! Believe it or not!... It seems that this divine person calmed the atmosphere of discussion.

Today, even after thousands of years also
just by remembering his name, the danger on his
devotees goes away. Like this he was a 'Siddhapurush'!

जब जेतपुर में माणेकचंद्र का कालधर्म हुआ तब उनके देह को अग्निसंस्कार के लिए मोढवाड़ी लाया गया। तब वहाँ पर पहले अग्निसंस्कार कौन करे? यह विचार विमर्श हो रहा था और उसी समय चमत्कार हुआ... क्या?... अग्नि स्वयं प्रकट हो गई। मानो या ना मानो! तो जैसे कि इस दिव्य पुरुष ने वाद संवाद के वातावरण को शांत कर दिया।

आज सैंकड़ों वर्ष के बाद भी उनका सिर्फ
नामस्मरण करने पर भक्तों के संकट दूर होते हैं...। ऐसे थे यह सिद्धपुरुष।

पूज्य श्री जयचंद्रजी की तपसाधना

संयम जीवन : ५९ वर्ष

गुरुदेव : पूज्य देवजी महाराज साहेब

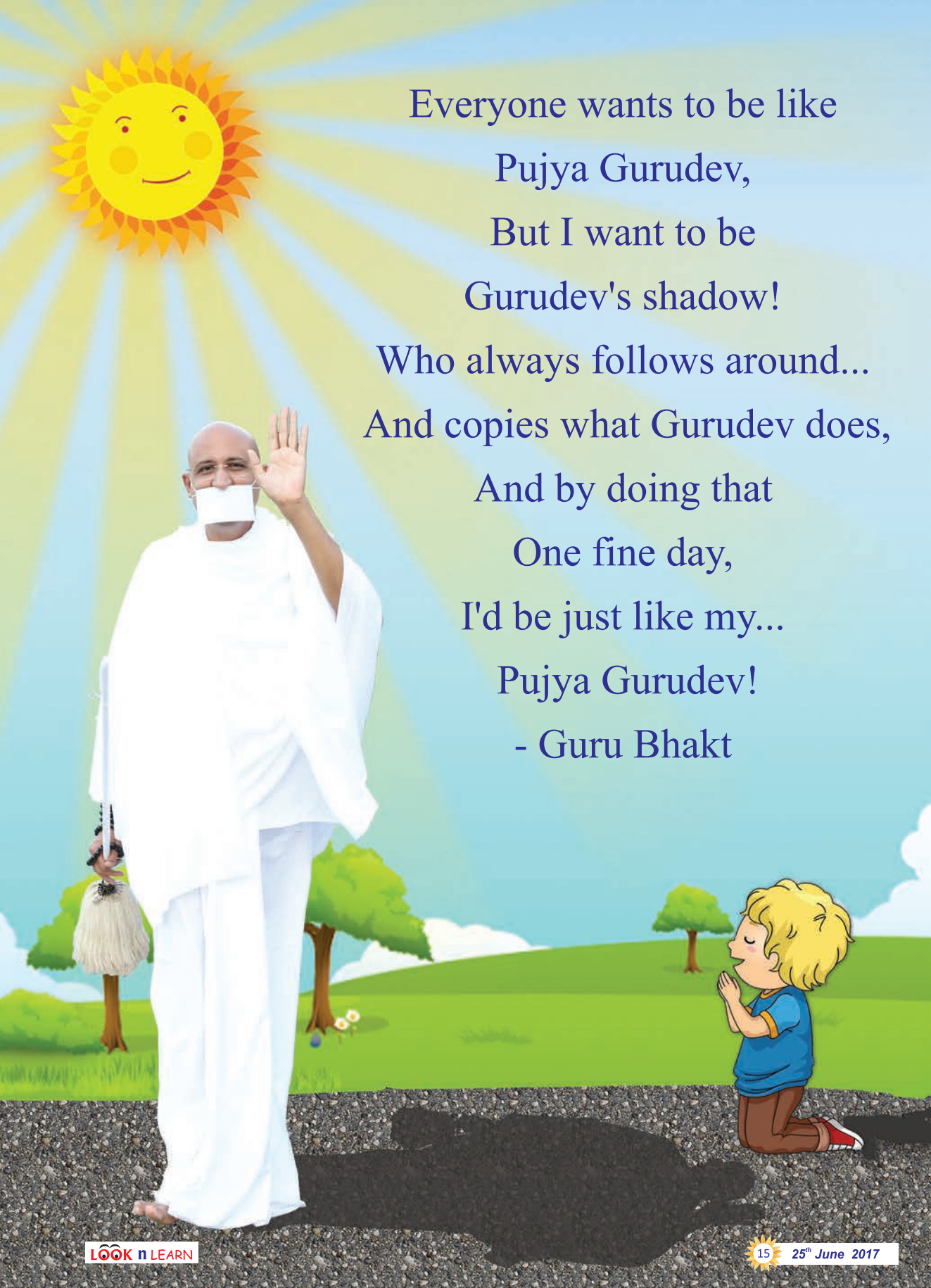
Everyone wants to be like
Pujya Gurudev,
But I want to be
Gurudev's shadow!
Who always follows around...
And copies what Gurudev does,
And by doing that
One fine day,
I'd be just like my...
Pujya Gurudev!
- Guru Bhakt

The sky
seems bright,
The stars are
shining brighter,
The leaves
are rejoicing,
The air
seems mystical,
It feels
like magic,
Finally, its
Guru Poornima.

- Nysha Doshi

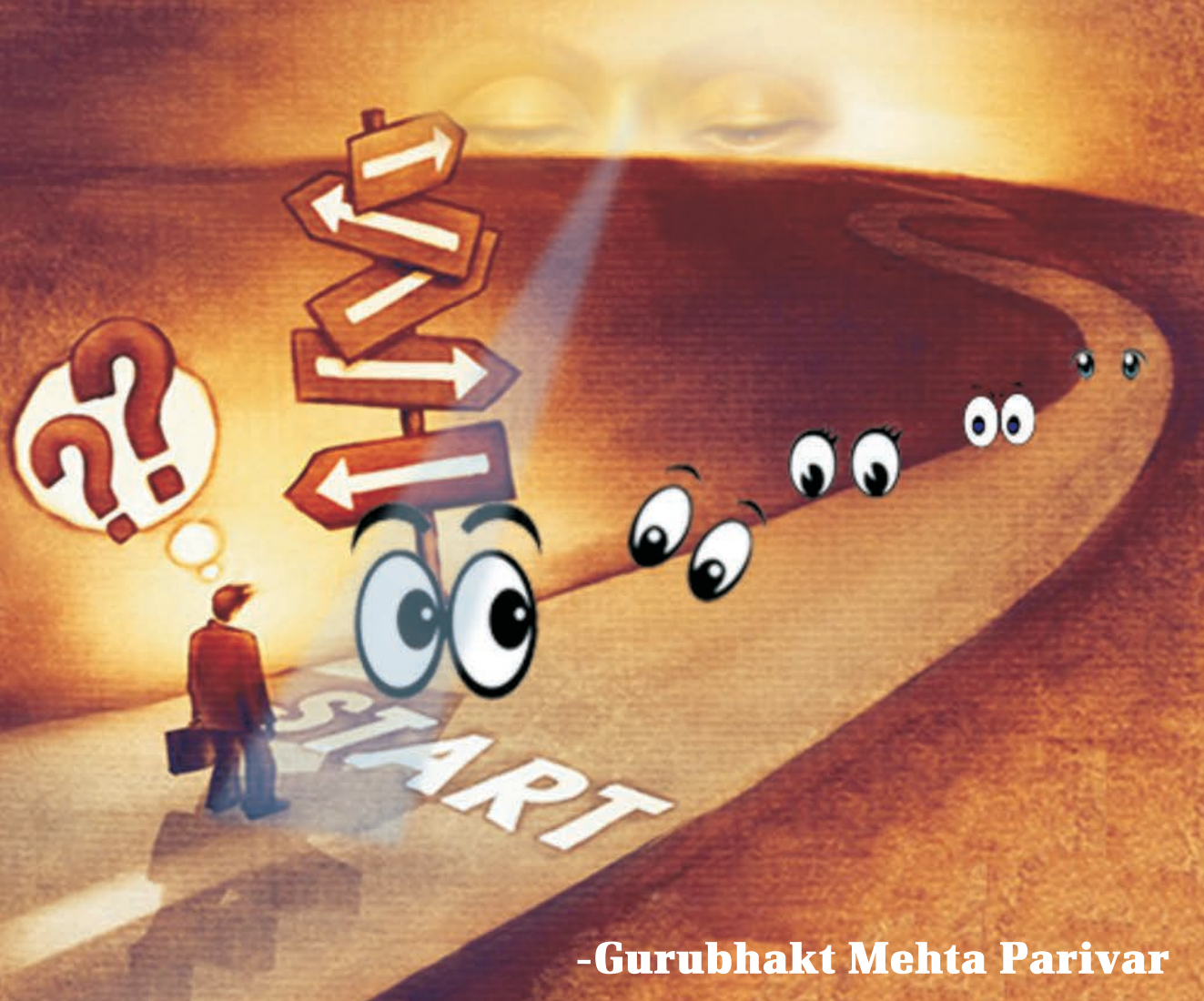

-Gurubhakt Mehta Parivar

Even though there are thousand eyes on me,
The only pair of eyes that matter to me are my Gurudev's,
For they are the only guiding light to me.
Like a shadow that's always with you,

Identify the moment and write your comments

Diksha event of Shree Manekchandraji M.S.

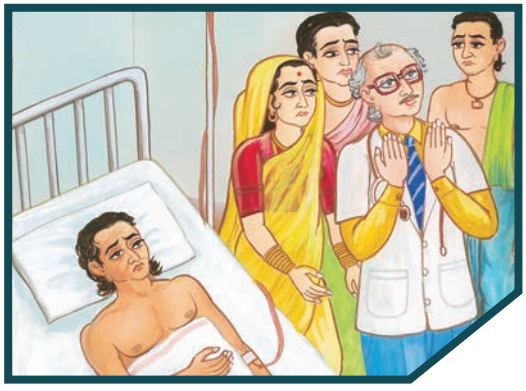

A Note from the Editor!

Thank you subscriber!!!
For constant interest in Look n Learn Magazine. We all appreciate your feedback as they help us to improve and serve you better. It's a request to send us your valuable feedbacks,complains, suggestions regarding Look n Learn Magazine on the following ID.

Address :- Look n Learn Magazine
Parasdham Vallabh baug Lane, Tilak Road Ghatkopar E, Mumbai-77
Contact No :- 022-21027676
ID :- getintouch108@gmail.com

Registered with Registrar of Newspapers under RNI No. MAH MUL/2011/40056
Vol.: 9, Issue:10 Date: 25.06.2017, Postal Registration No. MNE/171/2015-17.
Date of Posting / Date of Publication 10th & 25th of every month.
License to post without prepayment, WPP license No. MR/Tech/WPP-273/NE/2017.
Look N Learn - Posted at Mumbai patrika channel sorting office Mumbai -1

ગુરુપૂર્ણિમા મહોત્સવ

ગુરુ સંગ સાધીએ સહકર્મિતા

અનમોલ તે દિન	અનમોલ તે ઘડી
09.07.2017	સવારના 09.30 કલાકે

સદ્‌ગુરુ સાથે
સિધ્ધક્ષેત્રના સંગાથી બનવા,
આવો, આજના પાવન દિવસે કરીએ એક સત્ સંકલ્પ,

"આપણા કર્મોને આપણે બનાવીશું
ગુરુદેવના કર્મો જેવા અને **બનીશું એમના જેવા !!**
આપણી **અર્પણતાને** બનાવીએ ગુરુપૂર્ણિમાની **સાર્થકતા !"**

ગુરુદેવ !

આપ અમારા અંતરને જાણી, અમને અંતરઆત્મા તરફ
પ્રગતિ કરાવી રહ્યાં છો, આપના અસીમ ઉપકારને અમારા નતમસ્તકે વંદન !!

Publisher, Printer and Owner Ashok R. Sheth, Printed at : Accurate Graphics Pvt. Ltd.,
15-A, Samrat Mill Compound, L.B.S Marg, Vikhroli (W), Mumbai - 400 079.
Publish at Mumbai : 20, Vanik Nivas, Kama Lane, Ghatkopar (W), Mumbai - 86. Editor : Ashok R. Sheth